चीन में यूरोपीयों का प्रवेश

Ashish Kumar Thakur
B.A. II History(H) paper- IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :— चीन के भौगोलिक परिवेश :—

चीन पूर्वी एशिया का एक विशाल देश है। इसका कुल क्षेत्रफल 37,68,720 वर्ग मील है। मुख्य चीन में आजकल 18 प्रांत है। इसके अतिरिक्त मंचूरिया, सिकियांग और तिब्बत भी चीन में शामिल है। इस प्रकार चीन एक विशाल भूभाग पर फैला हुआ है।

इस विशाल क्षेत्र में अनेक नदियाँ एवं पर्वतश्रृंखलाएँ है। इसकी तीन बड़ी नदियाँ है: ह्वांगहो (पीली नदी), यांग्त्सी और सिकियांग। चीन की सभ्यता के विकास में इन नदियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ह्वांगहो नदी का बहाव हमेशा बदलती रहती है जिसके फलस्वरूप चीन को समय-समय पर भीषण विनाश का सामना करना पड़ता है। यांग्त्सी नदी के मध्य चीन का प्रमुख मार्ग है इसमें काफी दूर तक जहाज आ-जा सकते है चीन की आबादी का आधा भाग इसी नदी की तटभूमि पर रहता है। सिकियांग दक्षिण की नदी है। केण्टन इसी के मुहाने के करीब बसा हुआ है। चीन की ये नदियाँ यातायात, सिंचाई और उर्वरता के प्रमुख साधन हैं और इनकी घाटियाँ चीन की प्राचीन सभ्यता के मुख्य केन्द्र थी। इनकी घाटियों में आरम्भ से ही चावल, गेहूँ, बाजरा आदि की पैदावार प्रचुर मात्रा में होती रही है।

चीन की पर्वत श्रृंखलाओं में तिनसान, क्वानलून, हिंगान और हिमालय की श्रृंखलाएँ उल्लेखनीय है। पर्वतीय क्षेत्र में लोहा, कोयला, तांबा आदि अनेक खनिज द्रव्यों की प्रचुरता भी आरम्भ से पाई जाती है। इन्हीं कारणों से चीन शुरु से ही एक बड़ा सम्पन्न देश रहा है और प्राचीनकाल में यहाँ एक अत्यंत उच्च कोटी की सभ्यता का विकास हुआ।

चीन की सभ्यता :—

चीन की सभ्यता प्राचीनतम् एवं सर्वाधिक समृद्ध सभ्यताओं में से एक है। अति प्राचीनकाल में ही यहाँ के निवासियों ने कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान, आदि में आश्चर्यजनक उपलब्धि हासिल कर ली थी। पौराणिक कथाओं को भूलकर आज जिसे हम चीन का इतिहास कहते है, उसका आरम्भ शांग वंश (1523-1027 ई०पूर्व) से हुआ। उसके बाद चाऊ वंश (1027-556 ई०पू०) का काल आया, जो चीनी सभ्यता का स्वर्णयुग सिद्ध हुआ।

Ashish

Scanned with CamScanner

इसी काल में चीन में कन्फ्यूशियस तथा लाओत्जे जैसे महान दार्शनिकों का उदय हुआ, जिन्होंने चीन के लम्बे इतिहास में आनेवाले पीढ़ियों के लिए अपनी छाप छोड़ दी, किन्तु इसके बाद ही चीन पर हूणों का आक्रमण शुरु हुआ और चीन में अव्यवस्था आ गई।

इसी काल में चीन पर चीनत्सी का नियंत्रण रहा। चाऊ काल के अंत में इस राजवंश के राजाओं ने पूर्व की ओर बढ़ना शुरु किया, अपने प्रतिद्वन्दी राज्यों को हराया और अपने मुखिया शेंग शीह हुआंग ती को चीन का पहला सम्राट बनाया।

इस सम्राट ने उत्तरी सीमा पर बनी हुई दीवार के कुछ भागों को जोड़कर इसे विशाल दीवार का रूप दिया गया और इस प्रकार चीनियों तथा 'बर्बर जनता' के बीच की सीमा तय कर दी।

अपने छोटे से काल में चीन साम्राज्य विशाल दीवार और ब्लॉन्टसी तक फैल गया और धीरे-धीरे हिन्द-चीन के टोंकिन तक बढ़ गया। इस प्रकार चीइन - जिससे सम्भवतः 'चीन' नाम प्रचलित हुआ - के कारण ही विशाल दीवार के अंदर के प्रदेश को एक विशाल राष्ट्र की भावना मिली। यह भावना चीन के बाद के इतिहास में महत्वपूर्ण रही।

हान वंश के काल (206 ई०पू०- 220 ई०) में चीनी साम्राज्य के क्षेत्र में और वृद्धि हुई। यह पूर्व में प्रशान्त महासागर से लेकर पश्चिम में कैस्पियन सागर तक फैल गया। हान संस्कृति ने चीन के जीवन को अनेक प्रकार से समृद्ध बनाया।

चीनी विचारों पर कन्फ्यूशियस के सिद्धान्तों का अमिट प्रभाव डालने के कार्य की नींव भी रखी गई। गणित के आधार पर सही चंद्र पंचांग तैयार किया गया तथा एक भूकम्पमापक यंत्र बना। हानकाल के अंतिम दिनों में चमकदार मिट्टी के बर्तन बनने आरम्भ हुए। राजकीय पुस्तकालय की स्थापना हुई जिसमें हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत होने लगे। प्रमाणिक इतिहास भी पहली बार लिखे गए। कागज का निर्माण भी इसी काल में आरम्भ हुआ।

उत्तरवर्ती हान साम्राज्य के पतन के उपरान्त की चार शताब्दियाँ (220 - 590 ई०) चीन के इतिहास का अन्धकारमय युग थी।

Ashish

इस काल में विदेशी आक्रमण, छोटे-छोटे राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा तथा राजनीतिक उथल-पुथल का भी खेल चलता रहा लेकिन इसी काल में चीन में बौद्ध धर्म ने भी प्रवेश किया जो बाद में चीनी चित्रधारा के अभिन्न अंग बन गया।
590 ई० से 618 ई० तक सुइवंश के राजाओं ने चीन पर शासन किया। इस वंश के बाद चीन में तांग वंश (618-906) का शासन आरम्भ हुआ, जिसने चीन को पुनः उसके इतिहास के स्वर्णयुग में पहुँचा दिया। शासन के लिए देश को अनेक प्रांतों में बाँटा गया। विधि संहिता तैयार की गई और नमक का विस्तार कर व्यापार को प्रोत्साहन दिया गया। शिक्षा के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया तथा राजकीय नौकरियों के लिए प्रतियोगिता परीक्षा की प्रणाली आरम्भ हुई। शिल्प और निर्माण-कलाओं में अत्यधिक उन्नति हुई। दो विशाल ज्ञानकोष भी तैयार किए गए। चीन के कई महान कवि इसी युग में पैदा हुए थे। छपाई और कागज का भी इसी काल में आविष्कार किया गया।

तांग वंश के पतन के साथ ही चीन में पुनः राजनीतिक अस्थिरता फैल गई। मंगोल जाति के खितान लोगों ने मंचुरिया और मंगोलिया पर अधिकार कायम कर लिया। साम्राज्य के अन्य भागों से छोटे-छोटे क्षेत्र अलग हो गए। इस अराजक स्थिति में ही सुंग वंश का आविर्भाव हुआ, जिसने 960 से 1279 ई० तक राज्य किया। इस वंश के अधीन उत्तर होपेई और शान्सी को छोड़कर विशाल दीवार के दक्षिण का सारा चीन शामिल था।

1214 ई० में पेकिंग मंगोल नेता चंगेज खाँ के कब्जे में चला गया। मंगोल ~~खाँ~~ के साम्राज्य के उत्तराधिकारी कुबलई खाँ ने युआन वंश (1260-1368 ई०) स्थापित किया, लेकिन एक शताब्दी के शासन के बाद मंगोल वंश का पतन हो गया। और चीन का शासन अंतिम चीनी राजवंश मिंग (1368-1644) के हाथ में चला गया।
सतरहवीं शताब्दी के मध्य में मिंग को हराकर एक और विदेशी मंचू वंश ने चीन पर अधिकार कर लिया, जिसका शासन 1912 ई० में गणराज्य की स्थापना तक जारी रहा।

Scanned with CamScanner